JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"DARUHARIDRA - AN AYURVEDIC LITERATURE REVIEW"

Dr. Karishma Bhadra[1] , Dr. Ashwini Kumar Sharma[2]

1. P.G. Scholar , Dept. of *Dravyaguna Vigyan* , M.M.M. Govt. *Ayurvedic* College , Udaipur (Raj.)
2. Head of department , Dept. of *Dravyaguna Vigyan* , M.M.M. Govt. *Ayurvedic* College, Udaipur (Raj.)

Corresponding author : Dr. Karishma Bhadra

Institute : M.M.M. Govt. *Ayurvedic* College , Udaipur (Raj.)

ABSTRACT

Daruharidra (*Berberis aristata* DC.), belonging to the family Berberidaceae, is an important medicinal plant described extensively in Ayurvedic literature. Its characteristic yellow-coloured wood forms the basis of its nomenclature, and it is known by several synonyms reflecting its morphological and therapeutic attributes. Classical Ayurvedic texts have described *Daruharidra* under different *Gana* and *Varga* classifications and documented its use in a wide range of disorders.

BOTANICAL NAME: *Berberis aristata* DC**.**

"Berberis" **-** Derived from the Arabic word meaning berries.

"aristata"**-** Comes from Latin "aristatus", meaning plant having spiny or bristle-like structures.

FAMILY: Berberidaceae

A. *NIRUKTI*

दारुहरिद्रा - हरिद्रावत् पीतवर्णा दारुणि भवति । भा. प्र.नि हरितक्यादि वर्ग

Its wood resembles turmeric in its yellow colour."

काष्ठस्य पीतवर्णाद् दारुहरिद्रेति संज्ञास्ति ॥ प्रि.नि. शतपुष्पादि वर्ग

It is known as *Daruharidra* because the wood has a yellow coloration

B. *PARYAY*

Table no 1: Interpretation of some synonyms: [1]

Sr. No.	Synonyms	Interpretation
1.	दारुहरिद्रा	दारुप्रधाना हरिद्रावर्णा । A plant having yellow wood and flowers
2.	पीतदारु	पीतं दार्वस्य । The wood of Daruharidra is yellow coloured.
3.	पीतद्रु	पीतश्चासौ द्रुमश्च पीतकाण्डत्वात् पीतपुष्पत्वाच्च । The stem and flowers of Daruharidra are yellow in colour
4.	कटंकटेरी	पत्राणां कण्टकित्वात् । The plant has spines on margins of leaves
5.	कण्टकिनी	पत्रे कण्टकयुक्ता । The plant bears many spines on leaves
6.	कुसुम्भला	कुसुम्भवद् वर्णं लातीति । a plant having yellow wood and flowers used for making yellow dye like kusumbha
7.	कृमिहरा	कृमीन् हरतीति । anthelmintic
8.	दार्वी	दारुप्रधानौषधिः । The important part of the plant is wood which is used as drug
9.	पचम्पचा	अत्यर्थं पचति इति पचम्पचापरं पालकं स्वास्थ्यं जनयति वा, 'जनी प्रादुर्भाव' That which digests excessively is called Pachampacha; generates health, or produces well-being
10.	पर्जन्या	मेघागमे फलागमात् । Fruits appear in rainy season
11	विशोधनी	शरीरं विशोधयतीति । It is purifies body

C. VERNACULAR NAME: [2]

Table no:2 Various vernacular names of *Daruharida* as tabulated

Sr. no.	Language	Name
1.	**Sanskrit**	Daruharidra
2.	**English**	Indian berberry
3.	**Hindi**	Daruhaldi
4.	**Marathi**	Daruhalad
5.	**Gujarati**	Daruharidra, Daruhuladur
6.	**Bengali**	Daruharidra
7.	**Kannada**	Maradarishana, Maradarishina, Daruhaladi
8.	**Malayalam**	Maramannal, Maramanjal
9.	**Telugu**	Manupasupu
10.	**Oriya**	Daruharidra, Daruhalidi
11.	**Punjabi**	Sumlu, Simlu, Kasmal Tamil: Gangeti, Varatiu manjal

12.	**Himachali**	Rasont, Kashmal
13.	**Nepal**	Chitra, Chutro
14.	**Urdu**	Darhald

D. HISTORICAL REVIEW

a) IN *VEDIC KALA*

The *Keshava Paddhati*, a classical vedic text, describes the external use of *daruharidra* in combination with *haridra* as a therapeutic measure for managing *khalitya*. **(के. प. ३० /१०).** [3]

b) IN *SAMHITA KALA*

Table No.- 3 Showing classification of *Daruharidra* in different *Samhita*

Samhita	***Varga***
Charak Samhita	*Lekhaniya, Arshoghna, Kandughna*
Sushrut Samhita	*Haridradi, Mustadi, Lakshadi*
Ashtang Hridaya	*Haridradi, Mustadi, Shirovirechan*
Ashtang Sangraha	*Lekhaniya, Arshoghna, Kandughna*

DARUHARIDRA IN *BRIHATTRAYI*

1. *Charak Samhita*: [4,5]

Table no. 4: Different references of *Daruharidra in Charak Samhita*

Reference	Name	Formulation	Indication	Administration
च.सु.4/9	दारूहरिद्रा	लेखनीय महाकषाय	लेखनकर्म	-
च.सु.4/11	दारूहरिद्रा	अर्शोघ्न महाकषाय	अर्श	-
च.सु.4/11	दारूहरिद्रा	कण्डुघ्न महाकषाय	कण्डु	-
च.सु.5/63	दार्वीत्वक	अणु तैल	त्रिदोषघ्न, इन्द्रियाणां बलप्रदम्	नावन नस्य
च.वि.7/17	दारूहरिद्रा	आस्थापन बस्ति योग	कृमि अपकर्षण	बस्ति
च.वि.8/135	दारूहरिद्रा	वमनकारक द्रव्य	वमन	-
च.चि.6/26	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	कफज प्रमेह	मधुसह पान
च.चि.6/28	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	कफज प्रमेह	मधुसह पान
च.चि.6/28	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	कफज प्रमेह	मधुसह पान
च.चि.6/40	दारुनिशा	फलत्रिकादी क्वाथ	सर्व प्रमेहे	मधुसह पान

च.चि.7/46	दार्वी	दार्व्यादि आस्थापन बस्ती	कुष्ठ	बस्ती
च.चि.7/61	दार्वी	दार्वी चूर्ण/ कल्क	कुष्ठ	गोमूत्रसह सेवन
च.चि.7/61	रसाञ्जन	रसाञ्जन चूर्ण	कुष्ठ	गोमूत्रसह सेवन
च.चि.7/84	दार्वी	दार्व्यादि लेप	कुष्ठ	लेप
च.चि.7/91	दार्वी	सिद्धार्थक स्नान क्वाथ	कुष्ठ, त्वक दोष, शोफ,पाण्डुघ्न	स्नान, वमन, विरेचन,उद्घर्षण
च.चि.7/94	दार्वी	श्वेतकरवीरमूल सिद्ध लेप	कुष्ठ	लेप
च.चि.7/97	रसाञ्जन	दार्व्यादि क्वाथ	कुष्ठ	पान
च.चि.7/102	दार्वी	कुष्ठाद्य तैल	कुष्ठ	पान
च.चि.7/102	दार्वी	कुष्ठाद्य तैल चूर्ण	कुष्ठ	आलेप,उद्वर्तन, प्रघर्षण,अवचूर्णन
च.चि.7/114	दार्वी	कनकक्षीरी तैल	मण्डलान्याशु भिन्द्याद् कृमींश्च कण्डू च विनिहन्यात्	अभ्यंग
च.चि.7/120	दार्वी	विपादिकाहर घृततैले	विपादिका,चर्मकुष्ठ, एककुष्ठ, किटिभ, अलसक कुष्ठ	अभ्यंग
च.चि.8/137	दार्वी	दार्व्यादि चूर्ण/गुटिका	रोचन, मुखशोधन	गुटिका/चूर्ण कवल धारण
च.चि.11/34	दार्वी	कोलादी घृत	क्षतक्षीण	पान
च.चि.12/53	दार्वी	पटोलमूलादि क्वाथ	वीसर्पदाहज्वरसन्निपाततृष्णा विषाणि श्वयथुं च हन्ति	1कुडव घृतसह पान
च.चि.14/196	दार्वी	दार्व्यादि चूर्ण	रक्तार्श नाशन	सेवन
च.चि.14/220	रसाञ्जन	रसाञ्जन	दाहे क्लेदे च गुदभ्रंशे	गुद प्रतिसारण
च.चि.14/221	दार्वी	दार्वी	दाहे क्लेदे च गुदभ्रंशे	गुद प्रतिसारण
च.चि.14/160	दारूहरिद्रा	कनकारिष्टः	भक्तरोचन,अर्श,ग्रहणीदोष, उदर,ज्वर,हृद्रोग,पाण्डु,गुल्म	पान
च.चि.14/186	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	रक्तार्श	पान
च.चि.14/187	रसाञ्जन	अतिविषादी क्वाथ	रक्तार्श	रसाञ्जन+ मधुसह पान

च.चि.14/231	दार्वी	ह्रीवेरादिघृत	पिच्छास्त्रावेऽर्शसां शूले,अतिसार,ग्रहणी,पाण्डुरोग, मूत्रकृच्छ्र,गुदभ्रंश,बस्त्यानाह, प्रवाहणे	पान
च.चि.14/234	दार्वी	सुनिषण्णकचाङ्गेरीघृत	अर्श,अतीसार, त्रिदोषज रक्तस्त्राव,प्रवाहण,गुदभ्रंशे ,अतिबहुश गुदाश्रये शोथशूल,मूत्रग्रह,मूढवात	केवल सर्पी पान/ विविध अन्नपानसह
च.चि.15/129	रसाञ्जन	नागराद्य चूर्ण	पैत्तिके ग्रहणीदोषे रक्तज अर्श, गुदे शूल, प्रवाहिका	क्षौद्र+ तण्डुलाम्बुसह पान
च.चि.15/134	रसाञ्जन एवं दार्वी	किरातादय चूर्ण	हृदयरोग,पाण्डु,ग्रहणीरोग,गुल्म,शूल,अरुचि,ज्वर,कामला, सन्निपात,मुखरोग	मधु/जल/ मद्यसह लेह/पान
च.चि.16/54	दार्वी	दार्व्यादि घृत	पाण्डुरोग, कामला	पान
च.चि.16/63	दार्वी	क्वाथ	कामला	मधुसह पान
च.चि.16/73	दार्वी	मण्डूर वटक	प्राणदा पाण्डुरोगिणाम्, कुष्ठ, अजीर्ण, शोथ, उरुस्तम्भ,कफामय,अर्श,कामला, मेह,प्लीहा	तक्रसह सेवन
च.चि.16/97	दार्वी	दार्व्यादि लेह	कामला, पाण्डुरोग	मधु+सर्पीसह लेहन
च.चि.19/52	रसाञ्जन	किराततिक्तकादि चूर्ण	पित्तातिसारघ्न	
च.चि.19/52	दारूहरिद्रा	बिल्वादि चूर्ण	पित्तातिसारघ्न	क्षौद्र+ तण्डुलोदकसह पान
च.चि.19/80	दारूहरिद्रा	दार्व्यादि घृत	अतीसारं जयेच्छीघ्रं त्रिदोषमपि दारुणम्	पेयामण्डसह पान
च.चि.21/59	दार्वी	पटोलादि शीत क्वाथ	विसर्प	पान
च.चि.21/60	दार्वी	विदल युक्त पटोलादि शीत क्वाथ	विसर्प	घृतसह पान
च.चि.21/97	दार्वी त्वक	दार्व्यादि चूर्ण	विसर्प	प्रक्षालन, सर्पि, वर्णचूर्ण प्रलेपन
च.चि.25/88	दार्वी त्वक	चंदनादि प्रलेप	व्रणरोपणम्	प्रलेप
च.चि.25/93	दार्वी त्वक	दूर्वा सिद्ध तैल	प्रधानं व्रणरोपणम्	बाह्य प्रयोग

च.चि.25/93	दार्वी त्वक	कम्पिल्लक सिद्ध तैल	प्रधानं व्रणरोपणम्	बाह्य प्रयोग
च.चि.26/53	दार्वी	दार्वी चूर्ण	पित्तज मूत्रकृच्छ	माक्षिकसह पान
च.चि.26/188	दार्वी त्वक	पिप्पल्यादि चूर्ण	सर्वेषु मुख रोगेषु	मधु/सीधु/माधव/ माध्वीकसह कवल धारण
च.चि.26/191	दार्वी	तेजोव्हादि चूर्ण	रक्तस्राव, कण्डु, रुजापहम	मंजन
च.चि.26/197	दार्वी त्वक	पीतक चूर्ण	कण्ठरोग, मुखरोगेषु श्रेष्ठम	मधु एवं मूर्छित घृतमंडसह कवल धारण
च.चि.26/198	दार्वी त्वक	मृद्विकादि चूर्ण	कण्ठरोग	घृतमंडसह कवल धारण
च.चि.26/201	दार्वी	कटुकादि क्वाथ	कण्ठरोग विनाशन	पान
च.चि.26/202	दार्वी त्वक	दार्वी त्वक रसक्रिया	मुखरोग,असृग्दोष, नाडीव्रणापहा	क्षौद्रसह कवल धारण
च.चि.26/238	दार्वी	पृथ्वी कादि शीत कषाय	पित्तज नेत्ररोग, रक्तपित्तनूत	शर्करासह नेत्र पूरण
च.चि.26/243	दार्वी	अमृताव्हादि वर्ति	सर्वघ्नी दृकप्रसादनी	अंजन
च.चि.29/134	दार्वी	प्रपौण्डरीक आदि लेप	रुजा, दाह, विसर्प, राग, शोफ	लेप
च.सि.3/61	दार्वी	रासनादि निरुह बस्ति	-	निरुह बस्ति

2. *Sushrut Samhita*:[6,7]

Table no.5: Different references of *Daruharidra in Sushrut Samhita*

Reference	Name	Formulation	Indication	Administration
सु.सू.38/27	दारूहरिद्रा	हरिद्रादि गण	स्तन्यविशोधनौ | आमातिसारशमनौ विशेषाद्दोषपाचनौ	सेवन
सु.सू.38/54	दारूहरिद्रा	मुस्तादि गण	श्लेष्मनिषूदनः | योनिदोषहरः स्तन्यशोधनः पाचनस्तथा	सेवन
सु.चि.2/68	दार्वी	कालानुसार्यादि तैल	व्रण रोपण	बाह्य प्रयोग
सु.चि.9/34	दार्वी	महानील घृत	कुष्ठापहं, अभ्यङ्गात् अङ्गसावर्ण्यं श्वित्रिणां	पान, अभ्यंग

			जनयेन्नृणाम्। भगन्दर कृमी अर्श नाशन	
सु.चि.18/52	रसाञ्जन	श्यामादि लेप	मेदज गलगण्ड नाशक	लेप
सु.चि.19/30	रसाञ्जन	गैरिकादी लेप	पित्तज विसर्प	लेप
सु.चि.19/40	दार्वी	उपदंशहर चूर्ण	उपदंश	क्षौद्रसह लेप
सु.चि.19/45	रसाञ्जन	स्वर्जिकादि चूर्ण	व्रणवीसर्पनाशनम्	लेप
सु.चि.20/18	दार्वी	वचादि लेप	कच्छू, विचर्चिका, पामा नाशन	लेप
सु.क.2/48	हरिद्रे द्वे	अजेय घृत	विषाणि हन्ति सर्वाणि शीघ्रमेवा जितं क्वचित्	पान
सु.क.5/61	हरिद्रे	महागद	हन्ति विषं	पान, अञ्जन, अभ्यञ्जन, नस्य
सु.क.5/82	दार्वी	कुष्ठादि अगद	विषं हन्त्यगदः सर्वं मूषिकाणां विशेषतः	शर्करा + क्षौद्रसह सेवन
सु.क.8/47	हरिद्रे द्वे	कुष्ठादि अगद	त्रिकण्टकविषे हिताः	-
सु.क.8/49	रजनीद्वय	कुङ्कुमादि अगद	शतपद्विषनाशनः	-
सु.क.8/52	निशे	शिरीषादि अगद	अहिण्डुकाभिर्दष्टानामगदो विष नाशनः	-
सु.उ.10/4	दार्वी	गुन्द्रादि घृत	पित्तज अभिष्यन्द	तर्पण, सेक, नस्य
सु.उ.12/15	दार्वी	संखादि योग	सिरोत्पात	मधुसह अञ्जन
सु.उ.12/19	दार्वी	इक्षुआदि योग	अर्जुन रोग	सेक, अञ्जन
सु.उ.12/23	रसाञ्जन	रसाञ्जन	अर्जुन रोग	क्षौद्रसह अञ्जन
सु.उ.17/15	दार्वी	काश्मर्याद्यञ्जन	पित्तविदग्ध दृष्टिरोग	मधुसह अञ्जन
सु.उ.18/96	दार्वी	भद्रोदयाञ्जनम्	सदैवार्हति भूमिपः	अञ्जन
सु.उ.19/15	दार्वी	गुटिकाञ्जन	कुकूणक	अञ्जन
सु.उ.39/228	दार्वी	पटोलादि घृत	अपची,कुष्ठ,ज्वर,शुक्रार्जुन,व्रणान् हन्यात् नयन,वदन,श्रवण,घ्राणजान्	पान

सु.उ.39/231	रजनीद्वय	कल्याणक	जीर्णज्वर,श्वास,कास,गुल्मोन्माद,गर,अलक्ष्मी,ग्रह,अपस्मार,पापनुत्	पान
सु.उ.39/250	दार्वी	पटोलादि घृत	चक्षुष्य,शुक्लयोर्हितम्,घ्राण,कर्ण,अक्षि,वदन,वर्त्मरोग,कामला,ज्वर,वीसर्प	पान
सु.उ.40/64	दार्वी	दार्व्यादि योग	पित्तातिसार	सेवन
सु.उ.40/78	दार्वी	दार्व्यादि घृत	वातज, पित्तज, कफज, सन्नीपातज अतिसार	पान
सु.उ.40/87	दार्वी	लोध्रादि पुटपाक	कफ पित्तज अतिसार	मधुसह पान
सु.उ.40/104	दार्वी	दार्व्यादि घृत	सुदारुण त्रिदोषज अतीसार	पान

3. *Ashtang Hrudayam*[8]

Table no.6: Different references of *Daruharidra in Ashtang Hrudayam*

Reference	Name	Formulation	Indication	Administration
अ.हृ.सु.15/4	दार्वी	नावन गण	मूर्ध विरेचनार्थ	नस्य
अ.हृ.सु.15/35	हरिद्राद्वय	वचाहरिद्रादि गण	आमातीसारनाशन,मेदःकफादिहर , स्तन्यदोष हर	-
अ.हृ.सु.20/37	दार्वी त्वक	अणुतैल	महागुण, अणूनि ईन्द्रियस्रोतांसि प्रविशती	नस्य
अ.हृ.शा.1/61	दार्वी	दार्वीमधुकतोय	सप्तम मास गर्भिणी पीड़ा(कण्डु, विदाह, किक्किस) शांति	स्नान
अ.हृ.चि.8/102	दार्वी त्वक	किराततिक्तकादि क्वाथ	कफानुगते रक्ते अर्शे	पान
अ.हृ.चि.8/130	दार्वी त्वक	मधुकादि घृत	मूत्रकृच्छ्रे गुदभ्रंशे बस्त्यानाहे प्रवाहणे| पिच्छास्रावेऽर्शसां शूले देयं तत्परमौषधम्||	पान
अ.हृ.चि.9/90	दार्वी	लाक्षादि घृत	अतीसारं जयेच्छीघ्रं त्रिदोषमपि दारुणम्	पेया, मण्डसह पान
अ.हृ.चि.10/34	दार्वी त्वक	पटोलादि चूर्ण	हृत्पाण्डुग्रहणीरोगगुल्मशूलारुचिज्वरान्|| कामलां सन्निपातं च मुखरोगांश्च नाशयेत्	मधुना लेह्यम,अथवा जलेन पेयं मद्यैर्वा
अ.हृ.चि.11/8	दार्वी	एर्वारुबीजादि	पित्तज मूत्रकृछ्र	तण्डुलाम्बुसह पान

अ.ह्.चि.12/6	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	सर्व प्रमेह शमन	पान
अ.ह्.चि.12/6	दार्वी	चित्रकादी क्वाथ	सर्व प्रमेह शमन	माक्षिकसह पान
अ.ह्.चि.12/7	दार्वी	गायत्री आदि चूर्ण	कफज प्रमेह	क्षौद्रसह पान
अ.ह्.चि.16/16	दार्वीत्वक्	मण्डूरवटक	प्राणदाः पाण्डुरोगिणां| कुष्ठान्यजरकं शोफमूरुस्तम्भ रोचकम्॥ अर्शांसि कामलां मेहान् प्लीहानं शमयन्ति च	-
अ.ह्.चि.16/36	द्विरजनी	व्योषादि घृत	सर्वान् प्रशमयत्याशु विकारान् मृत्तिकाकृतान्	-
अ.ह्.चि.16/43	दार्वी	दार्व्या रसम्	कामलार्ताय योजयेत्	मधुसह सेवन
अ.ह्.चि.17/31	दार्वी	पटोलादि घृत	हन्त्यन्तस्तापतृड्भ्रमान्॥ ससन्निपातवीसर्पशोफदाहविषज्वरान्|	पान
अ.ह्.चि.18/6	दार्वी	दार्व्यादि घृत	तृष्णावीसर्पवान् पिबेत्	पान
अ.ह्.चि.18/35	दार्वी	दार्व्यादि तैल	वातप्रधान विसर्प व्रण	बाह्य प्रयोग
अ.ह्.चि.19/40	दार्वी	पाठादि योग	कुष्ठी पीत्वा मासमरुक् स्याद्गुदकीली मेहीशोफी पाण्डुरजीर्णी कृमीमांश्च॥	मूत्रसह पान
अ.ह्.चि.19/59	दार्वी	सिद्धार्थकं स्नान(कषाय)	वर्णकस्तथोद्धर्षः| त्वग्दोषकुष्ठशोफप्रबाधनः पाण्डुरोगघ्नः	स्नान,वमनं, विरेचनं वर्णकस्तथोद्धर्षः
अ.ह्.चि.19/62	दार्वी	श्वेतकरवीमूलादि लेप	कुष्ठापह	लेपः
अ.ह्.चि.19/77	दार्वी	जीवन्त्यादी घृततैलपाकः	विपादिका नश्यति । चर्मैककुष्ठकिटिभं कुष्ठं शाम्यत्यलसकं च|	अभ्यंग
अ.ह्.चि.22/28	दार्वी	प्रपौण्डरीकादि लेप	रुग्दाहवीसर्परागशोफनिबर्हणः	लेप
अ.ह्.उ.13/6	दार्वी	पटोलादि घृत	सर्पिर्घ्राणकर्णास्यरोगजित्| विद्रधिज्वरदुष्टारुर्विसर्पापचिकुष्ठनुत्॥ विशेषाच्छुक्रतिमिरनक्तान्ध्योष्णाम्लदाहहृत्|	-

अ.ह्र.उ.13/93	दार्वी	मेदादि योग	तिमिर नाशन	नावन नस्य
अ.ह्र.उ.16/25	दार्वी	प्रप्रौण्डरीकादि वर्ति	सर्वाभिष्यन्दसम्भवान्॥ हन्ति रागरुजाघर्षान् सद्यो दृष्टिं प्रसादयेत्|	अंजन
अ.ह्र.उ.16/33	दार्वी	दार्वीप्रपौण्डरीक क्वाथ	सर्वाक्षिरोग	आश्च्योतन
अ.ह्र.उ.16/56	दार्वी	लाक्षादि मषी	श्रेष्ठा पिल्लानां रोपणार्थे	-
अ.ह्र.उ.22/54	दार्वी	दार्वीत्वकादि क्वाथ	कण्ठरोग	माक्षिक सह पान
अ.ह्र.उ.22/56	दार्वी	श्रेष्ठादि क्वाथ/ गुटिका	कण्ठरोग	कवलो/ प्रतिसारणम्
अ.ह्र.उ.22/87	दार्वी	मुखकान्तिकर योग	निर्व्यङ्गनीलीमुखदूषिकादि सञ्जायते चन्द्रसमानकान्ति	उद्वर्तन
अ.ह्र.उ.22/97	दार्वी	क्षुद्रादि कषाय	सर्वामयान् वक्त्रगतान्निहन्ति|	कवल
अ.ह्र.उ.22/98	दार्वी	पाठादि चूर्ण	दन्तमांसार्तिकण्डू-पाकस्रावाणं नाशनो घर्षणेन	सक्षौद्र दंत मंजन
अ.ह्र.उ.22/100	दार्वी	पीतकचूर्ण	दन्तमांसार्तिकण्डू-पाकस्रावाणं नाशनो घर्षणेन	समधु + आज्य मुखे धारण
अ.ह्र.उ.22/105	दार्वी	दार्वी घन	आस्यस्थः वक्त्रपाकनाडीव्रणापहः	सगैरिकक्षौद्रो
अ.ह्र.उ.25/67	दार्वी	जात्यादि घृत	सूक्ष्मवदना मर्माश्रिताः क्लेदिनो गम्भीराः सरुजोव्रणाः सगतयः शुध्यन्ति रोहन्तिच	बाह्य प्रयोग
अ.ह्र.उ.26/26	दार्वी	कालानुसार्यादि तैलं	वृषणयो रोपणम्	-
अ.ह्र.उ.37/73	दार्वी	मन्दर अगद	सर्व कीटलूतादिविष	-

4. *Ashatang Sangraha*[9,10]

Table no.7 : Different references of *Daruharidra in Ashtang Sangraha*

Reference	Name	Formulation	Indication	Administration
अ.सं.सू.12/26	रसाञ्जन	रसाञ्जन	-	-
अ.सं.सू.12/80	निशे	दारूहरिद्रा चूर्ण	मेह, कुष्ठ, कफपित्तहर,कण्डु, शोफ, दुष्टव्रण	सेवन, लेप

अ.सं.सू.14/2	दारुहरिद्रा	दारुहरिद्रासारौ	वमनोपयोगीनि	पान
अ.सं.सू.14/5	रसाञ्जन	रसाञ्जन	निरूहोपयोगीनि	बस्ति
अ.सं.सू.15/6	रसाञ्जन	रसाञ्जन	शिरोविरेचनोपयोगीनि	नस्य
अ.सं.सू.11/52	हरिद्रे	व्योषादि गुटिका	विषूचीका	नयनाञ्जन
अ.सं.सू.29/11	दार्वी त्वक	अणुतैल	विशेषेणेन्द्रियदार्ढ्यकरं केश्यं त्वच्यं कण्ठ्यं प्रीणनं बृंहणं	नस्य
अ.सं.चि.5/28	दार्वी त्वक	कोलादिघृतम्	उरःक्षत,कास	पान
अ.सं.चि.10/22	दार्वी	आमलकारिष्ट	अकाल,वली,पलित,खलति शमन	पान
अ.सं.चि.13/4	दार्वी	मधुकादीनि चूर्ण	पित्तज मूत्राघात	तण्डुलाम्बुसह सेवन
अ.सं.चि.13/4	दार्वी	दार्वी	पित्तज मूत्राघात	समाक्षिका + आमलकरससह सेवन
अ.सं.चि.14/5	दारुहरिद्रा	त्रिफलादि क्वाथ	सर्वप्रमेषु	पान
अ.सं.चि.14/5	दार्वी	असनादि क्वाथ	सर्वप्रमेषु	क्षौद्रसह पान
अ.सं.चि.18/26	दार्वी	माहिषघृत योग	पाण्डुरोग	पान
अ.सं.चि.18/30	दार्वी	दार्वी क्वाथ	क्वाथ	माक्षिकसह पान
अ.सं.चि.19/14	दार्वी	अभयादि क्वाथ	श्वयथुविषवीसर्पज्वरदाह पिपासा अन्तः सन्ताप सन्निपात	सर्पिसह पान
अ.सं.चि.20/14	दार्वी	दार्व्यादि चूर्ण	सर्वस्मिन् विसर्पे ग्रन्थिव्रण	बाह्य प्रयोग
अ.सं.चि.20/15	दार्वी त्वक	दार्व्यादि क्वाथ	कर्दम विसर्प	घृतसह पान
अ.सं.चि.21/12	दार्वी	दार्व्यादि योग	कुष्ठ	अनुवसन एवं आस्थापन
अ.सं.चि.21/34	दार्वी	दार्वी	कुष्ठ	गोमूत्रसह पान
अ.सं.चि.21/34	दार्वी	दार्व्यादि योग	गुदजोदरगुल्मकुष्ठ कोष्ठानिलाढ्यपवनग्रहणी प्रमेहान्|	गोमूत्रसह पान

अ.सं.चि.21/47	हरिद्रा	दार्वी	पाण्ड्वामय,कुष्ठ,मेह	गोमूत्रसह सेवन
अ.सं.चि.21/58	हरिद्रे	निम्बादि उद्वर्तन	कण्डू,पिटका,सकोठा,कुष्ठ,शोफ	उद्वर्तन
अ.सं.क.6/8	दार्वी	दार्वी कल्क	बस्ति व्यापद	गोमूत्रसह पान
अ.सं.उ.19/3	रसाञ्जन	चंदनादि योग	सर्व अक्षिरोग	विडालक
अ.सं.उ.19/4	दार्वी	दार्व्यादि योग	वातपित्त अभिषयन्द	विडालक
अ.सं.उ.19/10	दारुहरिद्रा	दारुहरिद्रा	वात अभिषयन्द	आश्च्योतन
अ.सं.उ.19/31	दार्वी	लोध्रादि योग	वेदनाघ्न, दाहरागघ्न	नेत्रे बध्नीयात्,परिषेक
अ.सं.उ.19/52	दार्वी	कुष्ठादि योग	कफज अभिषयन्द	पुटपाक
अ.सं.उ.19/36	दार्वी	दार्व्यादि रस क्रिया	सर्वाक्षिरोगेषु पित्तजेषु	सेवन
अ.सं.उ.19/61	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	पित्त अभिषयन्द	परिषेक
अ.सं.उ.19/72	रसाञ्जन	अपराजिता वर्ति	ऋते वातादभिष्यन्दात्तिमिराणि कुकूणकम्। पोथकीपिटकाः पिल्लानर्माणि च नियच्छति।	अंजन
अ.सं.उ.20/3	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	शुष्काक्षिपाक,अक्षिपाकघ्न	आश्च्योतन
अ.सं.उ.26/47	दार्वी	किराततिक्तकादि तैल	गलविद्रधि	नावन
अ.सं.उ.26/32	हरिद्राद्वय	प्रपौण्डरीकादि तैल	दन्तनाडी शोधन,रोपण	बाह्यप्रयोग
अ.सं.उ.26/52	दारुहरिद्रा	दार्व्यादि योग	सर्वमुखामयनाडीघ्न	निष्ठीवनं
अ.सं.उ.28/3	दारुहरिद्रा	दारुहरिद्रादि उत्कारिका	वातजे शिरोरोग	बाह्यप्रयोग
अ.सं.उ.30/35	निशाद्वय	पटोल्यादी योग	व्रणशोधन	आलेप
अ.सं.उ.30/65	दार्वी	पद्मकादि योग	वर्णसाधन (वर्णकर)	व्रण प्रलेप
अ.सं.उ.30/69	कालेयक	कालेयकादि योग	सवर्णकरण परम्	लेप

अ.सं.उ.31/46	हरिद्रे	रोपण तैल	सद्योव्रण रोपणमुत्तम	बाह्यप्रयोग
अ.सं.उ.39/7	दार्वीत्वक्	दार्व्यादि योग	श्रेष्ठो व्रणे	लेप
अ.सं.उ.40/98	हरिद्रे द्वे	अजेय घृत	-	-
अ.सं.उ.40/52	हरिद्रे	विषघ्नी पेया	युञ्ज्याद्वेगान्तरे सर्वविषघ्नीं	शोधनार्थ पेया
अ.सं.उ.40/55	रजनीद्वय	सञ्जीवनः	जीवनो विषसुप्तानां	पाननस्यञ्जनाघ्राणधूमालेपन धारणैः

DARUHARIDRA* IN OTHER *SAMHITA

***Chakradutta* (11th cent.AD): [11]**

Table no.8 : Different references of *Daruharidra* in *Chakradutta*

Reference	Name	Formulation	Indication	Administration
च.द.वातरक्त.21	दारुनिशा	नवकार्षिकः क्काथः	वातरक्तं तथा कुष्ठं पामानं रक्तमण्डलम्। कुष्ठं कापालिकं कुष्ठं पानादेवापकर्षति	पान
च.द.प्रमेह.22	दारुनिशा	फलत्रिकादिक्काथ	सर्वप्रमेहेषु समुत्थितेषु	पान
च.द.प्रमेह.24	दार्वी	त्रिफलादिक्काथ	काथ क्षौद्रेण मेहहा	
च.द.प्रमेह.46	दारुहरिद्रा	महादाडिमाद्य घृत	प्रमेहान् विंशतिश्चैव मूत्राघातांस्तथा ऽश्मरीम् । कृच्छ्र' सुदारुणञ्चैव हन्यादेतद्रसायनम्	पाने भोज्ये प्रदातव्यं
च.द.कण्ठ.24	दारुनिशा	यवाग्रजादिगुटिका	सर्वगलामयेषु	मुखेन तां धारयेत
च.द.नेत्र.9	दारुहरिद्रा	सैन्धवादिलेप	अशेषाक्षिरोगहरः	अक्षि बहिः प्रलेपो
च.द.ज्वराति.9	दार्वी	व्योषाद्यचूर्ण	तृष्णाऽरुचिप्रशमनं ज्वरातीसारनाशनम्	
च.द.मसू.14	दार्वी	द्विपञ्चमूलादिक्काथः	वातज मसूरिकायां	पान
च.द.नेत्र.6	दार्वी	दार्वीरसाञ्जनयोग	निहन्ति शीघ्रं दाहाश्रुवेदनाः स्यन्दसम्भवाः ॥	अंजन
च.द.नेत्र.18	हरिद्रे	पैत्तिकाभिष्यन्दचिकित्सा	श्रेष्ठमभिष्यन्दे तदञ्जनम्	अंजन
च.द.नेत्र.32	दार्वी	दार्व्यादि रसक्रिया	रसक्रियैषा दाहाश्रुरागरक्त रुजाऽपहा	
च.द.नेत्र.51	दार्वी	अभिघातजाक्षिशूले चिकित्साक्रम	अभिघाताक्षिशूलघ्नं नारीक्षीरेण पूरणम् ।	नेत्रपूरणम्

च.द.नेत्र.82	दार्वी	पटोलाद्य घृत	चक्षुष्यं शुक्रयोर्हितम् ॥ घ्राणकर्णाक्षिवर्त्म त्वङ्मुखरोग व्रणापहम् ।कामलाज्वरवीसर्प गण्डमालाहरं परम् ॥	

Sharangdhar Samhita[12]

Table no.9 : Different references of *Daruharidra* in *Sharangdhar Samhita*

Reference	Name	Formulation	Indication	Administration
शा.म.2/120	दारुनिशा	पुनर्नवादि क्वाथ	पाणिपादोदरमुखप्राप्तं शोफं निवारयेत् ।	-
शा.म.2/136	दारुनिशा	लघुमञ्जिष्ठादि क्वाथ	वातरक्तविनाशनः ।। पामाकपालिकाकुष्ठरक्तमण्डलजिन्मतः	-
शा.म.2/138	निशाद्वय	बृहन्मञ्जिष्ठादि क्वाथ	अष्टादशसु कुष्ठेषु वातरक्तार्दिते तथा। उपदंशे श्लीपदे च प्रसुप्तौ पक्षघातके। मेदोदोषे नेत्ररोगे मञ्जिष्ठादिः प्रशस्यते।	-
शा.म.1/9	दार्वी	दार्वीरस	जयति कामलाम् ।।	पान
शा.म.2/108	दार्वी	वरादि क्वाथ	मेहहा	पान
शा.म.2/109	दार्वी	फलत्रिकादि क्वाथ	सर्वप्रमेहविनिवृत्तये	पान
शा.म.2/110	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	जयेत् सशूलं प्रदरं पीतश्वेतासितारुणम् ।	पान
शा.म.2/120	दार्वी	वासादि क्वाथ	क्वाथः सर्वाक्षरोगहा। वैस्वर्यं पीनसं श्वासं नाशयेदुरसः क्षतम् ।	पान
शा.म.7/34	दार्वी	मण्डूर-वटक	कामलापाण्डुमेहार्श: शोथकुष्ठकफामयान् ऊरुस्तम्भमजीर्ण च प्लीहानं नाशयेदपि।	-
शा.म.7/40	दार्वी	चन्द्रप्रभा वटी	चन्द्रप्रभेति विख्याता सर्वरोगप्रणाशिनी। प्रमेहान् विंशतिं कृच्छ्रे मूत्राघातं तथाश्मरीम्	-
शा.म.9/72	द्वे हरीद्रे	गौराद्य घृत	विसर्पलूताविस्फोटविषकीटव्रणापहम्। गौराद्यमिति विख्यातं सर्पिर्विषहरं परम्	-
शा.म.9/79	द्वे निशे	फल घृत	एतत्सर्पिर्नरः पीत्वा स्त्रीषु नित्यं वृषायते । पुत्रानुत्पादयेद्धीमान् वन्ध्यापि लभते सुतम्।	-
शा.म.9/88	हरिद्रे द्वे	दूसरा फल घृत	एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरं परम् ।	-
शा.म.9/99	हरिद्रे द्वे	अङ्गारक तैल	तैलमङ्गारकं नाम सर्वज्वरविमोक्षणम् ।	-

शा.म.9/192	हरिद्रे द्वे	वचा तैल	एतत्तैलं निहन्त्याशु गण्डमालां सुदारुणाम्	-
शा.म.9/202	हरिद्रे द्वे	धत्तूर तैल	मज्जाश्रितं त्वग्गतं च वातं चास्थिगतं तथा । आक्षेपकं चास्थिभग्नं सन्धिभग्नं च नाशयेत् ।	-
शा.म.10/55	रजनीद्वय	देवदार्व्यादि अरिष्ट	मासादूर्ध्वं पिबेदेनं प्रमेहं हन्ति दुर्जयम्। वातरोगान् ग्रहण्यर्शोमूत्रकृच्छ्राणि नाशयेत् । देवदार्वादिकोऽरिष्टः कण्डूकुष्ठविनाशनः	-
शा.उ.8/32	दार्वीत्वक्	अणुतैल	तैलमेतत् त्रिदोषघ्नमिद्रियाणां बलप्रदम् । प्रयुञ्जानो यथाकालं यथोक्तानश्नुते गुणान्।	नावन नस्य
शा.उ.10/13	दार्वी	दार्व्यादि क्वाथ	शीतो मुखो धृतो हन्यान्मुखपाकं त्रिदोषजम्।	गण्डूष
शा.उ.10/17	दार्वी	कुष्ठादि प्रतिसारण	रक्तस्रुतिं दन्तपीडां शोथं दाहं च नाशयेत् ।	प्रतिसारण
शा.उ.11/46	दार्वी	सिध्महर लेप	लेपोऽयं वारिणा पिष्टः सिध्मनां नाशनः परः	लेप
शा.उ.11/88	निशायुगैः	शोधन-लेप	प्रलेपो व्रणशोधनः	प्रलेप
शा.उ.11/89	दार्वी	शोधन-रोपण लेप	लेपः शोधनरोपणः	लेप
शा.उ.13/31	दार्वी	यष्ट्यादि विडालक	सर्वनेत्रामयापहः	नेत्र बहिर्लेप
शा.उ.13/93	दार्वी	दार्व्यादि रसक्रिया	रसक्रियैषा दाहानुरक्तरागरुजो हरेत् ।	-

C) *NIGHANTU KALA*

During the *nighantu* period, *daruharidra* is extensively mentioned and classified under different *vargas* and *ganas* in various lexicons.

Table no.10 : Different references of *Daruharidra in Nighantu*

Sr. No.	*Nighantu*	*Gana/ Varga*
1	*Abhidhan manjari*	*Madanadigana varga- Velladi varga*
2	*Dhanvantari Nighantu*	*Guduchyadi varga*
3	*Bhavaprakash Nighantu*	*Haritakyadi varga*
4	*Kaiyadev Nighantu*	*Oushadi varga*
5	*Madanpal Nighantu*	*Abhyadi varga*
6	*Madanadi Nighatu*	*Chaturtha gana*
7	*Madhav Dravyagun*	*Vividh Oushadi varga*

8	*Nighantu Shesh*	*Vrukshakand*
9	*Priya Nighantu*	*Shatpushpadi varga*
10	*Raj Nighantu*	*Pippalayadi varga*
11	*Rajvallabh Nighantu*	*Oshadhshray parichhed*
12	*Saraswati Nighantu*	*Latavarga*
13	*Shabdchandrika*	*Vrukshadi varga*
14	*Shaligram Nighantu*	*Ashta varga*
15	*Soushrut Nighantu*	*Haridradi Gana*
16	*Sodhal Nighantu*	*Naam sangraha - guduchyadi* *Guna sangraha - guduchyadi*

D. *RASADI PANCHAK:*

Rasa

Table no.11: *Rasa* Acc. to different *acharya:*

रस	भा.प्र.नि	ध.नि	रा.नि.	म.नि	कै. नि	शा. नि	प्रि.श	च.सं
तिक्त	+	+	+	+	+	+	+	+
कटु	+	-	+	+	+	+	-	-
कषाय	-	-	-	-	-	-	-	-

Guna

Table no.12: *Guna* Acc. to different *acharya:*

गुण	भा.प्र.नि	ध.नि	रा.नि.	म.नि	कै. नि	नि. र	प्रि.श
लघु	-	-	-	-	-	-	+
रुक्ष	+	+	+	+	+	-	+
तीक्ष्ण	-	-	-	-	-	+	-

Vipaka

Table no.13: *Vipaka* Acc. to different *acharya:*

विपाक	भा.प्र.नि	ध.नि	रा.नि.	म.नि	कै. नि	नि. र	शा. नि	प्रि.श	च.सं
कटु	-	+	+	+	-	-	-	+	+

Veerya

Table no.14: *Veerya* Acc. to different *acharya:*

वीर्य	भा.प्र.नि	ध.नि	रा.नि.	म.नि	कै. नि	नि. र	शा. नि	प्रि.श	च.सं
उष्ण	+	+	+	+	+	+	+	+	-

Based on the information presented in the above table, it can be concluded that most authors have consistently described the *rasapanchaka* of *daruharidra* as follows:

Guna : *Laghu, Ruksha.*

Rasa : *Tikta, Katu.*

Vipaka : *Katu*

Veerya : *Ushna*

Fruit*(jarishka)* *-Madhura amla rasa, sheeta veerya*

E. EFFECT ON *DOSH*:

Table no.15: *Karma* Acc. to different *acharya:*

Dosha	BP	DN	RN	MN	KN	SN	PN	RVN
Kapha pitta	+	-	-	+	+	+	+	+

Daruharidra mainly pacifies *kapha* and *pitta*. *Kapha shamak* due to *katu vipak, ushna veerya, laghu, ruksha guna, tikta, katu rasa* and *pitta shamak* due to its *laghu guna* and *tikta rasa*.

F. *Panchabhautik* Composition :

Rasa	***Mahabhoota***
Tikta	*Vayu + kha*
Katu	*Vayu + teja*

G. *Karma of Daruharidra on Dhatu, Mala, Avayav*

Dhatu –*Rakta, meda*

Mala -*Mutra, purish, sweda*

Avayav –*Netra, mukha, twak, yakrut, pliha*

H. *Rogaghnata* of *Daruharidra*

Table no.16 : *Rogaghnata* of *Daruharidra* according to different *acharya*:

रोग	च.सं	सु. सं	भा.प्र.नि	ध.नि	कै. नि	रा.नि.	प्रि.श	स.नि
प्रमेहघ्न	+		+	+		+	+	
कण्डुघ्न	+		+			+		+
विसर्प	+					+		
अर्श	+							

ग्रहणी	+							
पांडु	+		+					+
कामला	+							
अतिसार	+	+						
व्रण रोपण	+		+	+		+	+	+
मूत्रकृछ्रहर	+							
मुखरोग	+			+	+			
कण्ठ रोग	+		+					
कर्ण रोग			+	+	+	+		
नेत्र रोग	+	+	+	+	+	+		+
शोफघ्न	+		+					+
दाहघ्न	+							
कण्डुघ्न	+			+		+		+
वर्ण्य			+					
विष						+		
कृमि								+
अपची								+
यकृत रोग							+	

I. POSOLOGY / DOSE: [13]

Churna – 2-3 gm

Tincture- 2-8 ml

Kwat[14] - 5-10 ml

J. PART USED: [15]

Mool, kashth, kand ,phal(jharishka), satva(rasanjan)

Veerya kalavadhi [16]***-*** *fruit*(one year)

Daruharidra, rasanjan- many years

Ahitkar [17]**-** Contraindicated in individuals with *ushna prakruti*

Nivaran- [18]

Daruharidra twak- *arka kalpana* of *Bijora* and *Narangi*

Fruit- *sharkara* or *lavanga*

K. IMPORTANT FORMULATIONS :

Table no. 17: Formulations of drug *Daruharidra*[19]

S.No.	Formulations
1.	*Darvyadi kwath*
2.	*Bhringraj tail*
3.	*Khadiradi gutika*

4.	*Khadirarishta*
5.	*Jatyadi tail*
6.	*Triphala ghrut*
7.	*Phalatrikadi kashaya*
8.	*Patolmooladi ghrut*
9.	*Katamkateryadi kashaya*
10.	*Kanakarishtha*
11.	*Darvyadi leham*

L. MORPHOLOGY [20]

Table no.18: Morphology of different parts of *Daruharidra*:

Character /Part	Description
1. Habitat and Distribution	*Berberis aristata* is native to the entire Himalayan range at elevations between 6,000 and 10,000 feet. It also occurs in the Nilgiri hills of Southern India and in the mountainous regions of Ceylon. The plant is hardy and can be successfully cultivated in English gardens.
2. Macroscopic Description	Daruharidra is a robust, perennial shrub that typically grows up to approximately eight feet in height. It has a thick, woody root enclosed by a thin, brittle outer bark. The plant bears erect, slender, cylindrical branches that are smooth, distinctly striated, and covered with pale yellowish-grey bark.
3. Leaf and Spine Characters	The leaves of elongated barren shoots are modified into hard, sharp spines that are cylindrical, straight, tapering, and smooth. These spines arise from a broad semi-amplexicaul base and generally bear two smaller lateral spinous branches spreading at right angles. True foliage leaves arise in dense fascicles from the axils of the spines on short lateral branches. These leaves are persistent and usually evergreen, measuring one to two inches in length, narrowly obovate-oblong, sessile, leathery, and smooth. The leaf margins are entire or bear a few distant, shallow teeth formed by adpressed bristles, and the colour is dark green above with a paler lower surface.
4. Inflorescence and Flowers	The flowers are numerous, stalked, and arranged in drooping racemes about three inches long, arising from leaf fascicles. Bracts are small, linear, and acuminate. Sepals are eight or nine in number, imbricate, oval, blunt, petaloid, veined, yellow in colour, with the outer sepals being much smaller. Petals are six in number, arranged in two whorls, strongly imbricate, slightly longer than the inner sepals, and bright yellow. Each petal bears two oval-linear glands at the base of the lateral veins.
5. Androecium and Gynoecium	There are six hypogynous stamens, equal in size, opposite the petals, and slightly shorter than the petals. Anthers are innate, blunt, two-celled, and dehisce by an oval valve. The ovary is superior, oval-oblong, tapering, and unilocular, containing a few erect ovules. The flower possesses a short style terminating in a flat, peltate stigma.
6. Fruit and Seed	The fruit is a small, smooth berry, approximately 1- 1.5 cm long, ovoid or oblong-ovoid in shape. It is purple in colour with a whitish bloom and is tipped with the persistent style and stigma.

	Each fruit contains two to four erect seeds that are ovoid, somewhat flattened, and covered with a thin, smooth, leathery testa. The embryo is large, with flat oval cotyledons embedded in copious soft endosperm.
7. Taxonomic Affinities	The species is closely allied to the common European barberry (*Berberis vulgaris*). It differs mainly in its more leathery and nearly evergreen leaves, more numerous flowers, longer style, and distinct fruit characters. The species shows considerable variation in leaf size and shape. Several formerly described species are now regarded as mere forms and have been grouped by J. D. Hooker into three principal varieties. Two closely related species, *Berberis lycium* Royle and *Berberis asiatica* Roxb., are also important sources of Indian barberry bark.
8. Collection and Preparation	Collection of the root bark in autumn, when the bitter principle is present in maximum concentration. The bark should be removed while fresh and then dried.
9. Phenology	Flowering time- March to April Fruiting time- May to July

M. Key Characters for Identification

An erect, glabrous, spinescent shrub of about 3 to 6 m.

Leaves in tufts of five to eight, obovate, sessile with spinous-toothed margin.

Flowers: numerous, yellow in corymbose racemes.

Fruits: globose to ovoid berries that turn bluish violet on maturity.

Roots: thick, cylindrical, knotted internally yellowish-brown.

FIGURE 1: DIFFERENT PARTS OF THE DRUG *DARUHARIDRA*

N. SUBSTITUTES AND ADULTERANTS: [21]

Species such as *Berberis asiatica Roxb.* ex DC. and *Berberis lycium Royle* are frequently used as substitutes for *Berberis aristata var. aristata*. In the regions of South India and Mumbai, *Coscinium fenestratum (Gaertn.) Colebr.* is likewise accepted and utilised as Daruharidra. The crude drug is often adulterated with stems of other plant species that are artificially colored yellow to resemble the genuine drug. A simple method to detect such adulteration is by boiling the stems in water; the adulterants lose their yellow coloration, whereas authentic *B. aristata* var. *aristata* retains its natural color without any noticeable change.

REFERENCE

1.P. V. Sharma, Naamrupajanam (characterization of medicinal plant), Varansi, chaukhambha vishbharti, reprint 2018, Daruharidra 83, page no. 101.

2.Gallery of medicinal plants, Monika Sharma, chapter 28, Daruharidra, page 27

3. Shastry JLN. Dravyaguna Vijnana. Vol. 2. Reprint ed. Varanasi: Chaukhambha Orientalia; 2017. Daruharidra. p. 54.

4.Pandit Kashinath pandey, dr. gorakhnath Chaturvedi, charak Samhita, vidhotini hindi commentary, Pratham bhag (Sutra, Nidan, viman Sharir, Indriya sthan), Varanasi chaukhambha Bharti academy reprint edition 2021.

5.Shrimad Agnivesh praneet, charak Samhita, vidhotini hindi commentary, 2nd part (Chikitsa, kalp, sidhi sthan), varanasi, chaukhambha bharti academy.

6.Kaviraj ambikadutta shastri, Sushrut Samhita, ayurved tatva sandipika hindi commentary, Pratham bhag (Sutra, Nidan, Sharir, kalpa, chikitsa sthan), Varanasi chaukhambha Sanskrit sansthan, reprint edition 2020.

7.Kaviraj ambikadutta shastri, Sushrut Samhita, ayurved tatva sandipika hindi commentary, 2nd part (uttar tantra), Varanasi chaukhambha Sanskrit sansthan, reprint edition 2020.

8.Srimadvagbhat, asthang hriday, Dr. bharmanand Tripathi, Delhi, chaukhambha Sanskrit pratishthan, reprint edition 2022.

9.Dr. Ravidatt Tripathi, hindi commentory saroj, asthang sangrah of srimad vagbhat, sutra sthan, Delhi, chaukhambha Sanskrit pratisthan.

10.Prof. K. R. srikantha murthy asthang sangrah of vagbhat, English translation, vol. 2nd (sharir, nidan, chikitsa, kalp sthan) Varanasi, chaukhambha Orientalia, 2nd edition 1999.

11.chakradutta by chakrapanidutta edited by Bramha Shankar Shastri, Chaukhambha Sanskrit Series, Varanasi.

12.Sarangadhara Samhita - Dipika Hindi Vyakhya Sahita, pratham and Madhyam khanda, by Dr. Brahmanand Tripathi, 2nd Sansakarana Chaukhambha Bharati Prakasana, Varanasi, 1994

13. Bhavamishra. Bhavaprakasha Nighantu. Commentary by Prof. KC Chunekar. Purvakhanda. Varanasi: Chaukhambha Bharati Academy; Reprint 2022. Haritakyadi Varga. Daruharidra. p. 115.

14.Government of India, Ministry of Health and Family Welfare, Department of ISM & H. The Ayurvedic Pharmacopoeia of India. Part I. Vol. 2. Daruharidra. p. 33.

15. Bhavamishra. Bhavaprakasha Nighantu. Commentary by Prof. KC Chunekar. Purvakhanda. Varanasi: Chaukhambha Bharati Academy; Reprint 2022. Haritakyadi Varga. Daruharidra. p. 115.

16,17,18. Vanaushadhi Ratnakar, Parik G, Garg G, editors. Sudhanidhi Vanaushadhi Ratnakara Anka. ashtama Bhaga, Vijaygarh, Sudhanidhi Karyalaya; 2007.page- 290

19. Government of India, Ministry of Health and Family Welfare, Department of ISM & H. The Ayurvedic Pharmacopoeia of India. Part I. Vol. 2. New Delhi: Government of India; Daruharidra. p. 33.

20. Robert Bently and Henry Trimen, Medicinal Plants, volume 1st, page 16.

21. Gupta AK, Tandon N, Sharma M. Quality Standards of Indian Medicinal Plants. Vol. 3. New Delhi: Indian Council of Medical Research; 2006. *Berberis aristata* DC. p. 79.